

Para 11

Sipara 11 of 30 · 151 Ayahs · Translation: Hindi

At-Tawba

93

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۖ رَضُوا ۖ بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ
الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

उनकी आँखों से आँसू जारी थे (इल्ज़ाम की) सबील तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर है जिन्होंने बावजूद मालदार होने के तुमसे (जिहाद में) न जाने की इजाज़त चाही और उनके पीछे रह जाने वाले (औरतों, बच्चों) के साथ रहना पसन्द आया और खुदा ने उनके दिलों पर (गोया) मोहर कर दी है तो ये लोग कुछ नहीं जानते

94

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۖ قُلْ لَا تَعْتَذِرُوا ۖ لَنْ تُؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ
أَخْبَارِكُمْ ۖ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ۖ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

जब तुम उनके पास (जिहाद से लौट कर) वापस आओगे तो ये (मुनाफिकीन) तुमसे (तरह तरह) की माअज़रत करेंगे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि बातें न बनाओ हम हरगिज़ तुम्हारी बात न मानेंगे (क्योंकि) हमें तो खुदा ने तुम्हारे हालात से आगाह कर दिया है अनकीरब खुदा और उसका रसूल तुम्हारी कारस्तानी को मुलाहज़ा फरमाएंगे फिर तुम ज़ाहिर व बातिन के जानने वालों (खुदा) की हुज़ूरी में लौटा दिए जाओगे तो जो कुछ तुम (दुनिया में) करते थे (ज़रा ज़रा) बता देगा

95

سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا أُنْقَلِبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ
إِنَّهُمْ رِجْسٌ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً ۖ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

जब तुम उनके पास (जिहाद से) वापस आओगे तो तुम्हारे सामने खुदा की कसमें खाएंगे ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो तो तुम उनकी तरफ से मुँह फेर लो बेशक ये लोग नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नुम है (ये) सज़ा है उसकी जो ये (दुनिया में) किया करते थे

يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا ۚ عَنْهُمْ ۚ فَإِنْ تَرْضَوْا ۚ عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ

तुम्हारे सामने ये लोग कसमें खाते हैं ताकि तुम उनसे राज़ी हो (भी) जाओ तो खुदा बदकार लोगों से हरगिज़ कभी राज़ी नहीं होगा

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا ۚ وَنِفَاقًا ۚ وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا ۚ حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ
رَسُولِهِ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

(ये) अरब के गँवार देहाती कुफ़र व निफाक में बड़े सख्त हैं और इसी काबिल हैं कि जो किताब खुदा ने अपने रसूल पर नाज़िल फरमाई है उसके एहक़ाम न जाने और खुदा तो बड़ा दाना हकीम है

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا ۚ وَيَتَرَبَّصُّ بِكُمُ الدَّوَائِرَ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ
السَّوْءِ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ

और कुछ गँवार देहाती (ऐसे भी हैं कि जो कुछ खुदा की) राह में खर्च करते हैं उसे तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे हक़ में (ज़माने की) गर्दिशों के मुन्तज़िर (इन्तेज़ार में) हैं उन्हीं पर (ज़माने की) बुरी गर्दिश पड़े और खुदा तो सब कुछ सुनता जानता है

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبًا عِنْدَ اللَّهِ
وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ ۚ لَهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ ۚ

और कुछ देहाती तो ऐसे भी हैं जो खुदा और आखिरत पर ईमान रखते हैं और जो कुछ खर्च करते हैं उसे खुदा की (बारगाह में) नज़दीकी और रसूल की दुआओं का ज़रिया समझते हैं आगाह रहो वाकई ये (खैरात) ज़रूर उनके तक़्रूब (क़रीब होने का) का बाइस है खुदा उन्हें बहुत जल्द अपनी रहमत में दाख़िल करेगा बेशक़ खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَنٍ ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا ۖ عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ ۖ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ ا ۖ ۚ
 ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

और मुहाजिरीन व अन्सार में से (ईमान की तरफ) सबक़त (पहल) करने वाले और वह लोग जिन्होंने नेक नीयती से (कुबूले ईमान में उनका साथ दिया खुदा उनसे राज़ी और वह खुदा से खुश और उनके वास्ते खुदा ने (वह हरे भरे) बाग़ जिन के नीचे नहरें जारी हैं तैयार कर रखे हैं वह हमेशा अब्दआलाबाद (हमेशा) तक उनमें रहेगें यही तो बड़ी कामयाबी है

وَمِمَّنْ حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۖ مَرَدُّوا ۖ عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۖ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۖ

और (मुसलमानों) तुम्हारे एतराफ़ (आस पास) के गँवार देहातियों में से बाज़ मुनाफ़िक़ (भी) हैं और खुद मदीने के रहने वालों में से भी (बाज़ मुनाफ़िक़ हैं) जो निफ़ाक़ पर अड़ गए हैं (ऐ रसूल) तुम उन को नहीं जानते (मगर) हम उनको (खूब) जानते हैं अनक़रीब हम (दुनिया में) उनकी दोहरी सज़ा करेगें फिर ये लोग (क़यामत में) एक बड़े अज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे

وَأَخْرُوجُهُمْ ۖ بَذْنُوهُمْ خَلَطُوا ۖ عَمَلًا ۖ صِلًا ۖ وَآخِرَ سَيِّئًا عَسَىٰ اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۖ رَّحِيمٌ

और कुछ लोग हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का (तो) एकरार किया (मगर) उन लोगों ने भले काम को और कुछ बुरे काम को मिला जुला (कर गोलमाल) कर दिया क़रीब है कि खुदा उनकी तौबा कुबूल करे (क्योंकि) खुदा तो यक़ीनी बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً ۖ تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ ۖ لَهُمْ ۖ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

(ऐ रसूल) तुम उनके माल की ज़कात लो (और) इसकी बदौलत उनको (गुनाहों से) पाक साफ़ करो और उनके वास्ते दुआएं ख़ैर करो क्योंकि तुम्हारी दुआ इन लोगों के हक़ में इत्मेनान (का बाइस है) और खुदा तो (सब कुछ) सुनता (और) जानता है

أَلَمْ يَعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ ۚ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

क्या इन लोगों ने इतने भी नहीं जाना यकीनन खुदा बन्दों की तौबा कुबूल करता है और वही खैरातें (भी) लेता है और इसमें शक नहीं कि वही तौबा का बड़ा कुबूल करने वाला मेहरबान है

وَقُلْ أَعْمَلُوا ۚ فَسِيرَیَ اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ۚ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ

और (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम लोग अपने अपने काम किए जाओ अभी तो खुदा और उसका रसूल और मोमिनीन तुम्हारे कामों को देखेंगे और बहुत जल्द (क़यामत में) ज़ाहिर व बातिन के जानने वाले (खुदा) की तरफ लौटाए जाएंगे तब वह जो कुछ भी तुम करते थे तुम्हें बता देगा

وَأَخْرُونَ مُرْجُونَ لَأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

और कुछ लोग हैं जो हुक्मे खुदा के उम्मीदवार किए गए हैं (उसको अख्तेयार है) ख्वाह उन पर अज़ाब करे या उन पर मेहरबानी करे और खुदा (तो) बड़ा वाकिफ़कार हिकमत वाला है

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا ۚ مَسْجِدًا ۚ ضِرَارًا ۚ وَكُفْرًا ۚ وَتَفْرِيقًا ۚ بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا ۚ لِمَنْ
حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ
يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

और (वह लोग भी मुनाफ़ि़क़ हैं) जिन्होंने (मुसलमानों के) नुकसान पहुंचाने और कुफ़्र करने वाले और मोमिनीन के दरमियान तफरका (फूट) डालते और उस शख्स की घात में बैठने के वास्ते मस्जिद बनाकर खड़ी की है जो खुदा और उसके रसूल से पहले लड़ चुका है (और लुत्फ़ तो ये है कि) ज़रूर क़समें खाएंगे कि हमने भलाई के सिवा कुछ और इरादा ही नहीं किया और खुदा खुद गवाही देता है

لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ ۚ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ

ये लोग यकीनन झूठे हैं (ऐ रसूल) तुम इस (मस्जिद) में कभी खड़े भी न होना वह मस्जिद जिसकी बुनियाद अव्वल रोज़ से परहेज़गारी पर रखी गई है वह ज़रूर उसकी ज्यादा हक़दार है कि तुम उसमें खड़े होकर (नमाज़ पढ़ो क्योंकि) उसमें वह लोग हैं जो पाक व पाकीज़ा रहने को पसन्द करते हैं और खुदा भी पाक व पाकीज़ा रहने वालों को दोस्त रखता है

أَفَمَنْ أُسِّسَ بُنْيَنُهُ ۚ عَلَى تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَنٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أُسِّسَ بُنْيَنُهُ ۚ عَلَى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ ۚ فَانْهَارَ بِهِ ۚ فِي نَارٍ جَهَنَّمَ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

क्या जिस शख्स ने खुदा के खौफ और खुशनूदी पर अपनी इमारत की बुनियाद डाली हो वह ज्यादा अच्छा है या वह शख्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद इस बोदे किनारे के लब पर रखी हो जिसमें दरार पड़ चुकी हो और अगर वह चाहता हो फिर उसे ले दे के जहन्नूम की आग में फट पड़े और खुदा ज़ालिम लोगों को मंज़िलें मकसूद तक नहीं पहुंचाया करता

لَا يَزَالُ بُنْيَنُهُمُ الَّذِي بَنَوْا ۚ رِيبَةً ۚ فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

(ये इमारत की) बुनियाद जो उन लोगों ने कायम की उसके सबब से उनके दिलों में हमेशा धरपकड़ रहेगी यहाँ तक कि उनके दिलों के परखचे उड़ जाएँ और खुदा तो बड़ा वाक्फ़िकार हकीम हैं

ۚ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقْتُلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۚ وَعَدًا عَلَيْهِ حَقًّا ۚ فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ ۚ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا ۚ بَبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

इसमें तो शक़ ही नहीं कि खुदा ने मोमिनीन से उनकी जानें और उनके माल इस बात पर खरीद लिए हैं कि (उनकी क़ीमत) उनके लिए बेहशत है (इसी वजह से) ये लोग खुदा की राह में लड़ते हैं तो (कुफ़्फ़ार को) मारते हैं और खुद (भी) मारे जाते हैं (ये) पक्का वायदा है (जिसका पूरा करना) खुदा पर लाज़िम है और ऐसा पक्का है कि तौरैत और इन्जील और कुरान (सब) में (लिखा हुआ है) और अपने एहद का पूरा करने वाला खुदा से बढ़कर कौन है तुम तो अपनी खरीद फरोख्त से जो तुमने खुदा से की है खुशियाँ मनाओ यही तो बड़ी कामयाबी है

التَّائِبُونَ الْعَبْدُونَ الْحَمِيدُونَ السَّائِحُونَ الرُّكُعُونَ السَّجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَفِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۚ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ

(ये लोग) तौबा करने वाले इबादत गुज़ार (खुदा की) हम्दो सना (तारीफ़) करने वाले (उस की राह में) सफर करने वाले रूकूउ करने वाले सज्जदा करने वाले नेक काम का हुक्म करने वाले और बुरे काम से रोकने वाले और खुदा की (मुकरर की हुई) हदो को निगाह रखने वाले हैं और (ऐ रसूल) उन मोमिनीन को (बेहिश्त की) खुशखबरी दे दो

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَنْ يَسْتَغْفِرُوا ۚ لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا ۚ أَوْ إِلَىٰ قُرْبَىٰ
مِنْ ۚ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

नबी और मोमिनीन पर जब ज़ाहिर हो चुका कि मुशरेकीन जहन्नुमी है तो उसके बाद मुनासिब नहीं कि उनके लिए मग़फिरत की दुआएं माँगें अगरचे वह मुशरेकीन उनके क़राबतदार हो (क्यों न) हो

وَمَا كَانَ أَسْتَغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ ۚ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ ۚ أَنَّهُ ۚ
عَدُوٌّ ۚ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّهٌ حَلِيمٌ ۚ

और इबराहीम का अपने बाप के लिए मग़फिरत की दुआ माँगना सिर्फ इस वायदे की वजह से था जो उन्होंने अपने बाप से कर लिया था फिर जब उनको मालूम हो गया कि वह यक्कीनी खुदा का दुश्मन है तो उससे बेज़ार हो गए, बेशक इबराहीम यक्कीनन बड़े दर्दमन्द बुर्दबार (सहन करने वाले) थे

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا ۚ بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ

खुदा की ये शान नहीं कि किसी क़ौम को जब उनकी हिदायत कर चुका हो उसके बाद बेशक खुदा उन्हें गुमराह कर दे हत्ता (यहां तक) कि वह उन्हीं चीज़ों को बता दे जिससे वह परहेज़ करें बेशक खुदा हर चीज़ से (वाक़िफ़ है)

إِنَّ اللَّهَ لَهُ ۚ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يُحْيِي ۚ وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ وَلِيٍّ ۚ وَلَا نَصِيرٍ ۚ

इसमें तो शक ही नहीं कि सारे आसमान व ज़मीन की हुकूमत खुदा ही के लिए खास है वही (जिसे चाहे) जिलाता है और (जिसे चाहे) मारता है और तुम लोगों का खुदा के सिवा न कोई सरपरस्त है न मददगार

لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ
مِنْ ۚ بَعْدَ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ ۚ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهُ ۚ بِهِمْ رَءُوفٌ ۚ
رَّحِيمٌ ۚ

अलबत्ता खुदा ने नबी और उन मुहाजिरीन अन्सार पर बड़ा फज़ल किया जिन्होंने तंगदस्ती के वक्त रसूल का साथ दिया और वह भी उसके बाद कि करीब था कि उनमें से कुछ लोगों के दिल जगमगा जाएँ फिर खुदा ने उन पर (भी) फज़ल किया इसमें शक नहीं कि वह उन लोगों पर पड़ा तरस खाने वाला मेहरबान है

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا ۚ حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ
عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا ۚ أَنْ لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا ۚ ۚ إِنَّ
اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

और उन यमीमों पर (भी) फज़ल किया) जो (जिहाद से पीछे रह गए थे और उन पर सख्ती की गई) यहाँ तक कि ज़मीन बावजूद उस वसअत (फैलाव) के उन पर तंग हो गई और उनकी जानें (तक) उन पर तंग हो गई और उन लोगों ने समझ लिया कि खुदा के सिवा और कहीं पनाह की जगह नहीं फिर खुदा ने उनको तौबा की तौफीक दी ताकि वह (खुदा की तरफ) रूजू करें बेशक खुदा ही बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اتَّقُوا ۚ اللَّهَ وَكُونُوا ۚ مَعَ الصَّادِقِينَ

ऐ ईमानदारों खुदा से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا ۖ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا ۖ بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطُؤْنَ مَوْطِئًا ۚ يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نِيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهِ ۚ عَمَلٌ ۚ صَلِحٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ

मदीने के रहने वालों और उनके गिर्दोंनवाँ (आस पास) देहातियों को ये जायज़ न था कि रसूल खुदा का साथ छोड़ दें और न ये (जायज़ था) कि रसूल की जान से बेपरवा होकर अपनी जानों के बचाने की फ़िक्र करें ये हुक्म उसी सबब से था कि उन (जिहाद करने वालों) को खुदा की रूह में जो तकलीफ़ प्यास की या मेहनत या भूख की शिद्दत की पहुँचती है या ऐसी राह चलते हैं जो कुफ़्फ़ार के ग़ैज़ (ग़ज़ब का बाइस हो या किसी दुश्मन से कुछ ये लोग हासिल करते हैं तो बस उसके ऐवज़ में (उनके नामए अमल में) एक नेक काम लिख दिया जाएगा बेशक खुदा नेकी करने वालों का अज़्र (व सवाब) बरबाद नहीं करता है

وَلَا يُنْفِقُونَ نَفَقَةً ۚ صَغِيرَةً ۚ وَلَا كَبِيرَةً ۚ وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِحَظِّهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

और ये लोग (खुदा की राह में) थोड़ा या बहुत माल नहीं खर्च करते और किसी मैदान को नहीं क़तआ करते मगर फ़ौरन (उनके नामाए अमल में) उनके नाम लिख दिया जाता है ताकि खुदा उनकी कारगुज़ारियों का उन्हें अच्छे से अच्छा बदला अता फरमाए

ۚ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا ۚ كَافَّةً ۚ ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ ۚ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ ۚ لِيَتَفَقَّهُوا ۚ فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا ۚ قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا ۚ إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ

और ये भी मुनासिब नहीं कि मोमिननि कुल के कुल (अपने घरों में) निकल खड़े हों उनमें से हर गिरोह की एक जमाअत (अपने घरों से) क्यों नहीं निकलती ताकि इल्मे दीन हासिल करे और जब अपनी क़ौम की तरफ पलट के आवे तो उनको (अज़्र व आखिरत से) डराए ताकि ये लोग डरें

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ قَاتِلُوا ۚ الَّذِينَ يُلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَلِيَجِدُوا ۚ فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ ۚ وَأَعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ

ऐ ईमानदारों कुफ़्फ़ार में से जो लोग तुम्हारे आस पास के है उन से लड़ों और (इस तरह लड़ना) चाहिए कि वह लोग तुम में करारापन महसूस करें और जान रखो कि बेशुबहा खुदा परहेज़गारों के साथ है

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ ۖ فَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَذِهِ ۖ إِيْمَانًا ۚ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ
ءَامَنُوا ۖ فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا ۚ وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ

और जब कोई सूरा नाज़िल किया गया तो उन मुनाफ़िक़ीन में से (एक दूसरे से) पूछता है कि भला इस सूरे ने तुममें से किसी का ईमान बढ़ा दिया तो जो लोग ईमान ला चुके हैं उनका तो इस सूरे ने ईमान बढ़ा दिया और वह वहां उसकी खुशियाँ मनाते हैं

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ ۖ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا ۖ وَهُمْ كَافِرُونَ

मगर जिन लोगों के दिल में (निफ़ाक़ की) बीमारी है तो उन (पिछली) ख़बासत पर इस सूरे ने एक ख़बासत और बढ़ा दी और ये लोग कुफ़्र ही की हालत में मर गए

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ ۖ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ

क्या वह लोग (इतना भी) नहीं देखते कि हर साल एक मरतबा या दो मरतबा बला में मुबितला किए जाते हैं फिर भी न तो ये लोग तौबा ही करते हैं और न नसीहत ही मानते हैं

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ ۖ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرِيكُمْ مِّنْ أَحَدٍ ۚ ثُمَّ
أَنْصَرَفُوا ۖ ۚ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ۚ لَا يَفْقَهُونَ

और जब कोई सूरा नाज़िल किया गया तो उसमें से एक की तरफ़ एक देखने लगा (और ये कहकर कि) तुम को कोई मुसलमान देखता तो नहीं है फिर (अपने घर) पलट जाते हैं (ये लोग क्या पलटेंगे गोया) खुदा ने उनके दिलों को पलट दिया है इस सबब से कि ये बिल्कुल नासमझ लोग हैं

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ ۖ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ
رَءُوفٌ ۖ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

लोगों तुम ही में से (हमारा) एक रसूल तुम्हारे पास आ चुका (जिसकी शफ़क्क़त (मेहरबानी) की ये हालत है कि) उस पर शाक़ (दुख) है कि तुम तकलीफ़ उठाओ और उसे तुम्हारी बेहूदी का हौका है ईमानदारों पर हद दर्जे रफ़ीक़ मेहरबान हैं

فَإِنْ تَوَلَّوْا؟ فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

ऐ रसूल अगर इस पर भी ये लोग (तुम्हारे हुक्म से) मुँह फेरें तो तुम कह दो कि मेरे लिए खुदा काफी है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मैंने उस पर भरोसा रखा है वही अर्श (ऐसे) बुर्जूग (मखलूका का) मालिक है

Yunus

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ

अलिफ़ लाम रा ये आयतें उस किताब की हैं जो अज़सरतापा (सर से पैर तक) हिकमत से मलूउ (भरी) है

2

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ رَجُلٍ ۖ مِنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ أَنْ لَهُمْ قَدَمٌ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ ۚ مُّبِينٌ

क्या लोगों को इस बात से बड़ा ताज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं लोगों में से एक आदमी के पास वही भेजी कि (बे ईमान) लोगों को डराओ और ईमानदारों को इसकी खुश ख़बरी सुना दो कि उनके लिए उनके परवरदिगार की बारगाह में बुलन्द दर्जे है (मगर) कुफ़फ़ार (उन आयतों को सुनकर) कहने लगे कि ये (शख्स तो यक़ीनन सरीही जादूगर) है

3

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۖ ثُمَّ أَسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا مِنْ ۖ بَعْدَ إِذْنِهِ ۚ ۚ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

इसमें तो शक़ ही नहीं कि तुमरा परवरदिगार वही खुदा है जिसने सारे आसमान व ज़मीन को 6 दिन में पैदा किया फिर उसने अर्श को बुलन्द किया वही हर काम का इन्तज़ाम करता है (उसके सामने) कोई (किसी का) सिफारिशी नहीं (हो सकता) मगर उसकी इजाज़त के बाद वही खुदा तो तुम्हारा परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो तो क्या तुम अब भी ग़ौर नहीं करते

4

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۚ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۚ إِنَّهُ ۚ يَبْدُوهُ ۚ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ لِيَجْزِيَ
 الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ ۚ مِّنْ
 حَمِيمٍ ۚ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ بِمَا كَانُوا ۚ يَكْفُرُونَ

तुम सबको (आखिर) उसी की तरफ लौटना है खुदा का वायदा सच्चा है वही यकीनन मखलूक को पहली मरतबा पैदा करता है फिर (मरने के बाद) वही दुबारा जिन्दा करेगा ताकि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्चे काम किए उनको इन्साफ के साथ जज़ाए (खैर) अता फरमाएगा और जिन लोगों ने कुफ़ एख्तियार किया उन के लिए उनके कुफ़ की सज़ा में पीने को खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अज़ाब होगा

5

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً ۚ وَالْقَمَرَ نُورًا ۚ وَقَدَرَهُ ۚ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا ۚ عَدَدَ
 السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
 يَعْلَمُونَ

वही वह (खुदाए कादिर) है जिसने आफ़ताब को चमकदार और महताब को रौशन बनाया और उसकी मंज़िलें मुकर्रर की ताकि तुम लोग बरसों की गिनती और हिसाब मालूम करो खुदा ने उसे हिकमत व मसलहत से बनाया है वह (अपनी) आयतों का वाक्फ़िकार लोगों के लिए तफ़सीलदार बयान करता है

6

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ ۚ لِّقَوْمٍ
 يَتَّقُونَ

इसमें ज़रा भी शक़ नहीं कि रात दिन के उलट फेर में और जो कुछ खुदा ने आसमानों और ज़मीन में बनाया है (उसमें) परहेज़गारों के वास्ते बहुतेरी निशानियाँ हैं

7

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا ۚ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنَّنُوا ۚ بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ
 ءَايَاتِنَا غَفْلُونَ

इसमें भी शक़ नहीं कि जिन लोगों को (क़यामत में) हमारी (बारगाह की) हुज़ूरी का ठिकाना नहीं और दुनिया की (चन्द रोज़) ज़िन्दगी से निहाल हो गए और उसी पर चैन से बैठे हैं और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं

8

أَوْ لَكَ مَاؤُهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا؟ يَكْسِبُونَ

यही वह लोग हैं जिनका ठिकाना उनकी करतूत की बदौलत जहन्नुम है

9

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُم بِإِيمَانِهِمْ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهِمُ
الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ

बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उन्हें उनका परवरदिगार उनके ईमान के सबब से मंज़िल मकसूद तक पहुँचा देगा कि आराम व आसाइश के बाग़ों में (रहेगें) और उन के नीचे नहरें जारी होगी

10

دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ؟ وَءَاخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ

उन बाग़ों में उन लोगों का बस ये कौल होगा ऐ खुदा तू पाक व पाकीज़ा है और उनमें उनकी बाहमी (आपसी) खैरसलाही (मुलाक्रात) सलाम से होगी और उनका आखिरी कौल ये होगा कि सब तारीफ़ खुदा ही को सज़ावार है जो सारे जहाँ का पालने वाला है

11

؟ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجْلُهُمْ ؟ فَنَذَرُ
الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ

और जिस तरह लोग अपनी भलाई के लिए जल्दी कर बैठे हैं उसी तरह अगर खुदा उनकी शरारतों की सज़ा में बुराई में जल्दी कर बैठता है तो उनकी मौत उनके पास कब की आ चुकी होती मगर हम तो उन लोगों को जिन्हें (मरने के बाद) हमारी हुज़ूरी का खटका नहीं छोड़ देते हैं कि वह अपनी सरकशी में आप सरगिरदा रहें

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنَّةٍ بِهِ ۖ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ
ضُرَّهُ ۚ مَرَّ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ ۚ مَّسَّهُ ۚ ۚ كَذَلِكَ زِينَةٌ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا ۚ
يَعْمَلُونَ

और इन्सान को जब कोई नुकसान छू भी गया तो अपने पहलू पर (लेटा हो) या बैठा हो या खड़ा (गरज हर हालत में) हम को पुकारता है फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ को दूर कर देते है तो ऐसा खिसक जाता है जैसे उसने तकलीफ के (दफा करने के) लिए जो उसको पहुँचती थी हमको पुकारा ही न था जो लोग ज्यादाती करते हैं उनकी कारस्तानियाँ यूँ ही उन्हें अच्छी कर दिखाई गई हैं

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونََ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۚ ۚ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا
كَانُوا ۚ لِيُؤْمِنُوا ۚ ۚ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ

और तुमसे पहली उम्मत वालों को जब उन्होंने शरारत की तो हम ने उन्हें ज़रूर हलाक कर डाला हालाँकि उनके (वक्त के) रसूल वाजे ए व रौशन मोज़िज़ात लेकर आ चुके थे और वह लोग ईमान (न लाना था) न लाए हम गुनेहगार लोगों की यूँ ही सज़ा किया करते हैं

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ ۚ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ

फिर हमने उनके बाद तुमको ज़मीन में (उनका) जानशीन बनाया ताकि हम (भी) देखें कि तुम किस तरह काम करते हो

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۚ ۚ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أُمْتُ بِقُرْءَانٍ غَيْرِ هَذَا
أَوْ بَدِّلْهُ ۚ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ ۚ ۚ مِنْ تِلْقَائِي نَفْسِي ۚ ۚ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ
إِلَيَّ ۚ ۚ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۚ

और जब उन लोगों के सामने हमारी रौशन आयते पढ़ी जाती हैं तो जिन लोगों को (मरने के बाद) हमारी हुजूरी का खटका नहीं है वह कहते है कि हमारे सामने इसके अलावा कोई दूसरा (कुरान लाओ या उसका रद्दो बदल कर डालो (ऐ रसूल तुम कह दो कि मुझे ये एख्तेयार नहीं कि मैं उसे अपने जी से बदल डालूँ मैं तो बस उसी का पाबन्द हूँ जो मेरी तरफ वही की गई है मैं तो अगर अपने परवरदिगार की नाफरमानी करु तो बड़े (कठिन) दिन के अज़ाब से डरता हूँ

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ ۚ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ بِهِ ۚ ۚ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا ۚ ا مِّن قَبْلِهِ ۚ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

(ऐ रसूल) कह दो कि खुदा चाहता तो मैं न तुम्हारे सामने इसको पढ़ता और न वह तुम्हें इससे आगाह करता क्योंकि मैं तो (आखिर) तुमने इससे पहले मुद्दतों रह चुका हूँ (और कभी 'वही' का नाम भी न लिया)

فَمَن أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ ۚ إِنَّهُ ۚ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ

तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते तो जो शख्स खुदा पर झूठ बोहतान बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाए उससे बढ़ कर और ज़ालिम कौन होगा इसमें शक नहीं कि (ऐसे) गुनाहगार कामयाब नहीं हुआ करते

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ ۚ ۚ قُلْ أَتَنْبِئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ ۚ سُبْحَنَهُ ۚ ۚ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ

या लोग खुदा को छोड़ कर ऐसी चीज़ की परसतिश करते हैं जो न उनको नुकसान ही पहुँचा सकती है न नफा और कहते हैं कि खुदा के यहाँ यही लोग हमारे सिफारिशी होंगे (ऐ रसूल) तुम (इनसे) कहो तो क्या तुम खुदा को ऐसी चीज़ की खबर देते हो जिसको वह न तो आसमानों में (कहीं) पाता है और न ज़मीन में ये लोग जिस चीज़ को उसका शरीक बनाते हैं

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً ۚ ۚ وَاحِدَةً ۚ ۚ فَأَخْتَلَفُوا ۚ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ ۚ ۚ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

उससे वह पाक साफ और बरतर है और सब लोग तो (पहले) एक ही उम्मत थे और (ऐ रसूल) अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक बात (क्रियामत का वायदा) पहले न हो चुकी होती जिसमें ये लोग एख्तिलाफ कर रहे हैं उसका फैसला उनके दरमियान (कब न कब) कर दिया गया होता

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ فَقُلْ إِنَّمَا الْغِيبُ لِلَّهِ فَأَنْتَظِرُونَ ۚ إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ

और कहते हैं कि उस पैग़म्बर पर कोई मोजिज़ा (हमारी ख्वाहिश के मुवाफ़िक़) क्यों नहीं नाज़िल किया गया तो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ग़ैब (दानी) तो सिर्फ़ खुदा के वास्ते खास है तो तुम भी इन्तज़ार करो और तुम्हारे साथ मैं (भी) यक़ीनन इन्तज़ार करने वालों में हूँ

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً ۖ مِّنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَّسَّتْهُمْ إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ ۚ فَيَـَٔيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ

और लोगों को जो तकलीफ़ पहुँची उसके बाद जब हमने अपनी रहमत का जाँका चखा दिया तो यकायक उन लोगों से हमारी आयतों में हीले बाज़ी शुरू कर दी (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तद्दीर में खुदा सब से ज्यादा तेज़ है तुम जो कुछ मक्कारी करते हो वह हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) लिखते जाते हैं

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ وَجَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ ۖ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ ۖ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ ۖ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۖ دَعَوُا ۖ اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَذِهِ ۖ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ

वह वही खुदा है जो तुम्हें खुशकी और दरिया में सैर कराता फिरता है यहाँ तक कि जब (कभी) तुम कश्तियों पर सवार होते हो और वह उन लोगों को बाद मुवाफ़िक़ (हवा के धारे) की मदद से लेकर चली और लोग उस (की रफ्तार) से खुश हुए (यकायक) कश्ती पर हवा का एक झोंका आ पड़ा और (आना था कि) हर तरफ़ से उस पर लहरें (बढ़ी चली) आ रही हैं और उन लोगों ने समझ लिया कि अब घिर गए (और जान न बचेगी) तब अपने अक्कीदे को उसके वास्ते निरा खरा करके खुदा से दुआएँ माग़ने लगते हैं कि (खुदाया) अगर तूने इस (मुसीबत) से हमें नजात दी तो हम ज़रूर बड़े शुक्र गुज़ार होंगे

فَلَمَّا أَنْجَلَهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ ۚ مَتَّعَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

फिर जब खुदा ने उन्हें नजात दी तो वह लोग ज़मीन पर (कदम रखते ही) फौरन नाहक सरकशी करने लगते हैं (ऐ लोगो तुम्हारी सरकशी का वबाल) तो तुम्हारी ही जान पर है - (ये भी) दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी का फायदा है फिर आखिर हमारी (ही) तरफ तुमको लौटकर आना है तो (उस वक्त) हम तुमको जो कुछ (दुनिया में) करते थे बता देगे

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنْ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ ۚ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا ۚ فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا ۚ كَأَن لَّمْ تَغْنَبِ بِالْأَمْسِ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

दुनियावी ज़िन्दगी की मसल तो बस पानी की सी है कि हमने उसको आसमान से बरसाया फिर ज़मीन के साग पात जिसको लोग और चौपाए खा जाते हैं (उसके साथ मिल जुलकर निकले यहाँ तक कि जब ज़मीन ने (फसल की चीज़ों से) अपना बनाओ सिंगार कर लिया और (हर तरह) आरास्ता हो गई और खेत वालों ने समझ लिया कि अब वह उस पर यक्रीनन काबू पा गए (जब चाहेंगे काट लेगे) यकायक हमारा हुक्म व अज़ाब रात या दिन को आ पहुँचा तो हमने उस खेत को ऐसा साफ कटा हुआ बना दिया कि गोया कुल उसमें कुछ था ही नहीं जो लोग ग़ौर व फिक्र करते हैं उनके वास्ते हम आयतों को यूँ तफसीलदार बयान करते हैं

وَاللَّهُ يَدْعُوهُ ۚ إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ ۚ مُسْتَقِيمٍ ۚ

और खुदा तो आराम के घर (बेहशत) की तरफ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत करता है

ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا ۚ الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ ۚ ۚ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ ۚ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ ۚ أُو۟لَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

जिन लोगों ने दुनिया में भलाई की उनके लिए (आखिरत में भी) भलाई है (बल्कि) और कुछ बढ़कर और न (गुनेहगारों की तरह) उनके चेहरों पर कालिक लगी हुई होगी और न (उन्हें) ज़िल्लत होगी यही लोग जन्नती हैं कि उसमें हमेशा रहा सहा करेंगे

وَالَّذِينَ كَسَبُوا ۚ السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ ۚ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ ۚ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ ۚ كَانَمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا ۚ ۚ مِنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا ۚ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

और जिन लोगों ने बुरे काम किए हैं तो गुनाह की सज़ा उसके बराबर है और उन पर रुसवाई छाई होगी खुदा (के अज़ाब) से उनका कोई बचाने वाला न होगा (उनके मुह ऐसे काले होंगे) गोया उनके चेहरे यबों यज़ूर (अंधेरी रात) के टुकड़े से ढक दिए गए हैं यही लोग जहन्नुमी हैं कि ये उसमें हमेशा रहेंगे

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۚ ۚ ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ ۚ مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ ۚ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ ۚ ۚ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِلَّا نَا تَعْبُدُونَ

(ऐ रसूल उस दिन से डराओ) जिस दिन सब को इकट्ठा करेंगे-फिर मुशरेकीन से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे (बनाए हुए खुदा के) शरीक ज़रा अपनी जगह ठहरो फिर हम वाहम उनमें फूट डाल देंगे और उनके शरीक उनसे कहेंगे कि तुम तो हमारी परसतिश करते न थे

فَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ۚ ۚ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغْفِلِينَ

तो (अब) हमारे और तुम्हारे दरमियान गवाही के वास्ते खुदा ही काफी है हम को तुम्हारी परसतिश की खबर ही न थी

هُنَالِكَ تَبْلُوا ۚ ۚ كُلُّ نَفْسٍ ۚ ۚ مَا أَسْلَفَتْ ۚ ۚ وَرُدُّوْا ۚ ۚ إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقُّ ۚ ۚ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا ۚ ۚ يَفْتَرُونَ

(गरज़) वहाँ हर शख्स जो कुछ जिसने पहले (दुनिया में) किया है जाँच लेगा और वह सब के सब अपने सच्चे मालिक खुदा की बारगाह में लौटकर लाए जाएँगे और (दुनिया में) जो कुछ इफ़तेरा परदाज़िया (झूठी बातें) करते थे सब उनके पास से चल चंपत हो जाएँगे

31

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَرَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ
مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا
تَتَّقُونَ

ऐ रसूल तुम उने ज़रा पूछो तो कि तुम्हें आसमान व ज़मीन से कौन रोज़ी देता है या (तुम्हारे) कान और (तुम्हारी) आँखों का कौन मालिक है और कौन शरूख़ मुर्दे से ज़िन्दा को निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दे को निकालता है और हर अम्र (काम) का बन्दोबस्त कौन करता है तो फौरन बोल उठेंगे कि खुदा (ऐ रसूल) तुम कहो तो क्या तुम इस पर भी (उससे) नहीं डरते हो

32

فَذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ ۚ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ

फिर वही खुदा तो तुम्हारा सच्चा खब है फिर हक़ बात के बाद गुमराही के सिवा और क्या है फिर तुम कहाँ फिरे चले जा रहे हो

33

كَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا ۖ أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

ये तुम्हारे परवरदिगार की बात बदचलन लोगों पर साबित होकर रही कि ये लोग हरगिज़ ईमान न लाएँगे

34

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدُو؟ ۝ اَلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ؟ ۝ قُلِ اَللّٰهُ يَبْدُو؟ ۝ اَلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ؟ ۝ فَاَنّٰى تُؤْفَكُونَ

(ऐ रसूल) उनसे पूछो तो कि तुम ने जिन लोगों को (खुदा का) शरीक बनाया है कोई भी ऐसा है जो मखलूकात को पहली बार पैदा करे फिर उन को (मरने के बाद) दोबारा ज़िन्दा करे (तो क्या जवाब देंगे) तुम्ही कहो कि खुदा ही पहले भी पैदा करता है फिर वही दोबारा ज़िन्दा करता है तो किधर तुम उल्टे जा रहे हो

35

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ ۚ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ ۚ أَفَمَنْ يَهْدِي
إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يُهْدَى ۚ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ

(ऐ रसूल उनसे) कहो तो कि तुम्हारे (बनाए हुए) शरीकों में से कोई ऐसा भी है जो तुम्हें (दीन) हक की राह दिखा सके तुम ही कह दो कि (खुदा) दीन की राह दिखाता है तो जो तुम्हे दीने हक की राह दिखाता है क्या वह ज्यादा हकदार है कि उसके हुक्म की पैरवी की जाए या वह शरूश जो (दूसरे) की हिदायत तो दर किनार खुद ही जब तक दूसरा उसको राह न दिखाए राह नहीं देख पाता तो तुम लोगों को क्या हो गया है

وَمَا يَتَّبِعْ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌۢ بِمَا يَفْعَلُونَ

तुम कैसे हुक्म लगाते हो और उनमें के अक्सर तो बस अपने गुमान पर चलते हैं (हालाँकि) गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में हरगिज़ कुछ भी काम नहीं आ सकता बेशक वह लोग जो कुछ (भी) कर रहे हैं खुदा उसे ख़ूब जानता है

وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ

और ये कुरान ऐसा नहीं कि खुदा के सिवा कोई और अपनी तरफ से झूठ मूठ बना डाले बल्कि (ये तो) जो (किताबें) पहले की उसके सामने मौजूद हैं उसकी तसदीक़ और (उन) किताबों की तफ़सील है उसमें कुछ भी शक़ नहीं कि ये सारे जहाँन के परवरदिगार की तरफ से है

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ ۚ وَادْعُوا ۚ مَنْ أَسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

क्या ये लोग कहते हैं कि इसको रसूल ने खुद झूठ मूठ बना लिया है (ऐ रसूल) तुम कहो कि (अच्छा) तो तुम अगर (अपने दावे में) सच्चे हो तो (भला) एक ही सूरा उसके बराबर का बना लाओ और खुदा के सिवा जिसको तुम्हें (मदद के वास्ते) बुलाते बन पड़े बुला लो

بَلْ كَذَّبُوا ۚ بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ ۚ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَّابَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ

(ये लोग लाते तो क्या) बल्कि (उलटे) जिसके जानने पर उनका हाथ न पहुँचा हो लगे उसको झुठलाने हालाँकि अभी तक उनके जेहन में उसके मायने नहीं आए इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था जो उनसे पहले थे-तब ज़रा ग़ौर तो करो कि (उन) ज़ालिमों का क्या (बुरा) अन्जाम हुआ

وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ

और उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं कि इस कुरान पर आइन्दा ईमान लाएंगे और बाज़ ऐसे हैं जो ईमान लाएंगे ही नहीं

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ أَنْتُمْ بَرِيءُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا ۚ بَرِيءٌ ۚ
مِمَّا تَعْمَلُونَ

और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार फसादियों को खूब जानता है और अगर वह तुम्हे झुठलाए तो तुम कह दो कि हमारे लिए हमारी कार गुजारी है और तुम्हारे लिए तुम्हारी कारस्तानी जो कुछ मैं करता हूँ उसके तुम ज़िम्मेदार नहीं और जो कुछ तुम करते हो उससे मैं बरी हूँ

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا ۚ لَا يَعْقِلُونَ

और उनमें से बाज़ ऐसे हैं कि तुम्हारी ज़बानों की तरफ कान लगाए रहते हैं तो (क्या) वह तुम्हारी सुन लेगें हरगिज़ नहीं अगरचे वह कुछ समझ भी न सकते हो

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْى وَلَوْ كَانُوا ۚ لَا يُبْصِرُونَ

तुम कही बहरों को कुछ सुना सकते हो और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ (टकटकी बाँधे) देखते हैं तो (क्या वह ईमान लाएँगे हरगिज़ नहीं) अगरचे उन्हें कुछ न सूझता हो तो तुम अन्धे को राहे रास्त दिखा दोगे

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا ۚ وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ

खुदा तो हरगिज़ लोगों पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं करता मगर लोग खुद अपने ऊपर (अपनी करतूत से) जुल्म किया करते हैं

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا ۚ إِلَّا سَاعَةً ۚ مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ
الَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا ۚ مُهْتَدِينَ

और जिस दिन खुदा इन लोगों को (अपनी बारगाह में) जमा करेगा तो गोया ये लोग (समझेगें कि दुनिया में) बस घड़ी दिन भर ठहरे और आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे जिन लोगों ने खुदा की बारगाह में हाज़िर होने को झुठलाया वह ज़रूर घाटे में हैं और हिदायत याफता न थे

وَأَمَّا نُرِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَى مَا يَفْعَلُونَ

ऐ रसूल हम जिस जिस (अज़ाब) का उनसे वायदा कर चुके हैं उनमें से बाज़ ख्वाहा तुम्हें दिखा दें या तुमको (पहले ही दुनिया से) उठा ले फिर (आखिर) तो उन सबको हमारी तरफ लौटना ही है फिर जो कुछ ये लोग कर रहे हैं खुदा तो उस पर गवाह ही है

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

और हर उम्मत का खास (एक) एक रसूल हुआ है फिर जब उनका रसूल (हमारी बारगाह में) आएगा तो उनके दरमियान इन्साफ़ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर ज़रा बराबर जुल्म न किया जाएगा

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

ये लोग कहा करते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (आखिर) ये (अज़ाब का वायदा) कब पूरा होगा

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا ۖ وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۖ إِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتُخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं खुद अपने वास्ते नुकसान पर कादिर हूँ न नफा पर मगर जो खुदा चाहे हर उम्मत (के रहने) का (उसके इल्म में) एक वक्त मुक़र्रर है-जब उन का वक्त आ जाता है तो न एक घड़ी पीछे हट सकती है और न आगे बढ़ सकते हैं

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ ۖ بَيَّتًا أَوْ نَهَارًا ۖ مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या तुम समझते हो कि अगर उसका अज़ाब तुम पर रात को या दिन को आ जाए तो (तुम क्या करोगे) फिर गुनाहगार लोग आखिर काहे की जल्दी मचा रहे हैं

أَنْتُمْ إِذَا مَا وَقَعَ ءَامَنْتُمْ بِهِ ۖ ءَاَلْنِ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ

फिर क्या जब (तुम पर) आ चुकेगा तब उस पर ईमान लाओगे (आहा) क्या अब (ईमान लाए) हालाँकि तुम तो इसकी जल्दी मचाया करते थे

52

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ ذُوقُوا ۚ عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ

फिर (क़यामत के दिन) ज़ालिम लोगों से कहा जाएगा कि (अब हमेशा के अज़ाब के मजे चखो (दुनिया में) जैसी तुम्हारी करतूतें तुम्हें (आखिरत में) वैसा ही बदला दिया जाएगा

53

ۚ وَيَسْتَنْدِ بِوَنِكَ أَحَقُّ هُوَ ۚ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ ۚ لَحَقُّ ۚ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ

(ऐ रसूल) तुम से लोग पूछते हैं कि क्या (जो कुछ तुम कहते हो) वह सब ठीक है तुम कह दो (हाँ) अपने परवरदिगार की कसम ठीक है और तुम (खुदा को) हरा नहीं सकते

54

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ۚ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۚ وَأَسْرُوا ۚ النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا ۚ الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

और (दुनिया में) जिस जिसने (हमारी नाफरमानी कर के) जुल्म किया है (क़यामत के दिन) अगर तमाम ख़ज़ाने जो ज़मीन में हैं उसे मिल जाएँ तो अपने गुनाह के बदले ज़रूर फ़िदया दे निकले और जब वह लोग अज़ाब को देखेंगे तो इज़हारे निदामत करेंगे (शर्मिदा होंगे) और उनमें बाहम इन्साफ़ के साथ हुक्म दिया जाएगा और उन पर ज़र्रा (बराबर जुल्म न किया जाएगा

55

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

आगाह रहो कि जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) खुदा ही का है आगाह राहे कि खुदा का वायदा यक़ीनी ठीक है मगर उनमें के अक्सर नहीं जानते हैं

56

هُوَ يُحْيِي ۚ وَيُمِيتُ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है और तुम सब के सब उसी की तरफ लौटाए जाओगे

57

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ ۚ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ ۚ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى ۚ وَرَحْمَةٌ ۚ لِلْمُؤْمِنِينَ

लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से नसीहत (किताबे खुदा आ चुकी और जो (मरज़ शिर्क वगैरह) दिल में हैं उनकी दवा और ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ ۚ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا ۚ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि (ये कुरान) खुदा के फज़ल व करम और उसकी रहमत से तुमको मिला है (ही) तो उन लोगों को इस पर खुश होना चाहिए

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ ۚ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا ۚ وَحَلَالًا ۚ قُلْ ءَاللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ ۚ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ

और जो कुछ वह जमा कर रहे हैं उससे कहीं बेहतर है (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम्हारा क्या ख्याल है कि खुदा ने तुम पर रोज़ी नाज़िल की तो अब उसमें से बाज़ को हुराम बाज़ को हलाल बनाने लगे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या खुदा ने तुम्हें इजाज़त दी है या तुम खुदा पर बोहतान बाँधते हो

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ

और जो लोग खुदा पर झूठ मूठ बोहतान बाँधा करते हैं रोजे क़यामत का क्या ख्याल करते हैं उसमें शक़ नहीं कि खुदा तो लोगों पर बड़ा फज़ल व (करम) है मगर उनमें से बहुतेरे शुक्र गुज़ार नहीं हैं

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ ۚ وَمَا تَتْلُوا ۚ مِنْهُ مِنْ قُرْءَانٍ ۚ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ ۚ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ

(और ऐ रसूल) तुम (चाहे) किसी हाल में हो और कुरान की कोई सी भी आयत तिलावत करते हो और (लोगों) तुम कोई सा भी अमल कर रहे हो हम (हम सर वक़्त) जब तुम उस काम में मशगूल होते हो तुम को देखते रहते हैं और तुम्हारे परवरदिगार से ज़रूर भी कोई चीज़ ग़ायब नहीं रह सकती न ज़मीन में और न आसमान में और न कोई चीज़ ज़रूर से छोटोटी है और न उससे बड़ी चीज़ मगर वह रौशन किताब लौहे महफूज़ में ज़रूर है

إِلَّا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

आगाह रहो इसमें शक़ नहीं कि दोस्ताने खुदा पर (क़यामत में) न तो कोई खौफ़ होगा और न वह आजुर्दा (गमगीन) खातिर होंगे

الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَكَانُوا ۙ يَتَّقُونَ

ये वह लोग हैं जो ईमान लाए और (खुदा से) डरते थे

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

उन्हीं लोगों के वास्ते दीन की ज़िन्दगी में भी और आखिरत में (भी) खुशखबरी है खुदा की बातों में अदल बदल नहीं हुआ करता यही तो बड़ी कामयाबी है

وَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۚ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

और (ऐ रसूल) उन (कुफ़ार) की बातों का तुम रंज न किया करो इसमें तो शक़ नहीं कि सारी इज्जत तो सिर्फ़ खुदा ही के लिए है वही सबकी सुनता जानता है

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ

आगाह रहो इसमें शक़ नहीं कि जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) खुदा ही के लिए है और जो लोग खुदा को छोड़कर (दूसरों को) पुकारते हैं वह तो (खुदा के फ़र्जी) शरीकों की राह पर भी नहीं चलते बल्कि वह तो सिर्फ़ अपनी अटकल पर चलते हैं और वह सिर्फ़ वहमी और ख्याली बातें किया करते हैं

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا ۚ فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ

वह वही (खुदाए क़ादिर तवाना) है जिसने तुम्हारे नफा के वास्ते रात को बनाया ताकि तुम इसमें चैन करो और दिन को (बनाया) कि उसकी रौशनी में देखो भालो उसमें शक़ नहीं जो लोग सुन लेते हैं उनके लिए इसमें (कुदरत की बहुतेरी निशानियाँ हैं)

قَالُوا ۖ أَتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ سُبْحَنَهُ ۚ ۙ هُوَ الْغَنِيُّ ۚ لَهُ ۚ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بِهٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

लोगों ने तो कह दिया कि खुदा ने बेटा बना लिया-ये महज़ लगों वह तमाम नकायस से पाक व पाकीज़ा वह (हर तरह) से बेपरवाह हैं व जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (सब) उसी का है (जो कुछ) तुम कहते हो (उसकी कोई दलील तो तुम्हारे पास है नहीं क्या तुम खुदा पर) (यू ही) बे जाने बूझे झूठ बोला करते हो

قُلْ إِنِّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ

ऐ रसूल तुम कह दो कि बेशक जो लोग झूठ मूठ खुदा पर बोहतान बाधते हैं वह कभी कामयाब न होंगे

مَتَّعٌ ۚ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا ۚ يَكْفُرُونَ

(ये) दुनिया के (चन्द रोज़ा) फायदे हैं फिर तो आखिर हमारी ही तरफ लौट कर आना है तब उनके कुफ़र की सज़ा में हम उनको सख्त अज़ाब के मज़े चखाएँगे

ۚ وَآتِلْ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ ۚ يَقُومُ ۚ إِنَّ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذِكْرِي بِآيَةِ اللَّهِ فَاعْلَىٰ اللَّهُ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا ۚ أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرَكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ۚ ثُمَّ أَقْضُوا ۚ إِلَىٰ وَلَا تُنْظِرُونَ

और (ऐ रसूल) तुम उनके सामने नूह का हाल पढ़ दो जब उन्होंने अपनी क्रौम से कहा ऐ मेरी क्रौम अगर मेरा ठहरना और खुदा की आयतों का चर्चा करना तुम पर शाक़ व गिरा (बुरा) गुज़रता है तो मैं सिर्फ़ खुदा ही पर भरोसा रखता हूँ तो तुम और तुम्हारे शरीक़ सब मिलकर अपना काम ठीक कर लो फिर तुम्हारी बात तुम (में से किसी) पर महज़ (छुपी) न रहे फिर (जो तुम्हारा जी चाहे) मेरे साथ कर गुज़रों और गुझे (दम मारने की भी) मोहलत न दो

فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِّنْ أَجْرٍ ۚ إِن أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ

फिर भी अगर तुम ने (मेरी नसीहत से) मुँह मोड़ा तो मैंने तुम से कुछ मज़दूरी तो न माँगी थी-मेरी मज़दूरी तो सिर्फ़ खुदा ही पर है और (उसी की तरफ से) मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं उसके फरमाबरदार बन्दों में से हो जाऊँ

فَكَذَّبُوهُ فَانْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ ۚ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلْفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ
بِأَيَّتِنَا ۚ فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الْمُنْذَرِينَ

उस पर भी उन लोगों ने उनको झुठलाया तो हमने उनको और जो लोग उनके साथ कश्ती में (सवार) थे (उनको) नजात दी और उनको (अगलों का) जानशीन बनाया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो मारा

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ ۚ بَعْدِهِ ۚ رَسُولًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا ۚ لِيُؤْمِنُوا ۚ بِمَا
كَذَّبُوا ۚ بِهِ ۚ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ

फिर ज़रा ग़ौर तो करो फिर हमने नूह के बाद और रसूलों को अपनी क्रौम के पास भेजा तो वह पैग़म्बर उनके पास वाजेए (खुले हुए) व रौशन मौजिजे लेकर आए इस पर भी जिस चीज़ को ये लोग पहले झुठला चुके थे उस पर ईमान (न लाना था) न लाए हम यूँही हद से गुज़र जाने वालों के दिलों पर (गोया) खुद मोहर कर देते हैं

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ ۚ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۚ بِأَيَّتِنَا فَأَسْتَكْبَرُوا ۚ
وَكَانُوا ۚ قَوْمًا ۚ مُّجْرِمِينَ

फिर हमने इन पैग़म्बरों के बाद मूसा व हारून को अपनी निशानियाँ (मौजिजे) लेकर फिरऔन और उस (की क्रौम) के सरदारों के पास भेजा तो वह लोग अकड़ बैठे और ये लोग थे ही कुसूरवार

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا ۚ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ ۚ مُّبِينٌ ۚ

फिर जब उनके पास हमारी तरफ से हक़ बात (मौजिजे) पहुँच गए तो कहने लगे कि ये तो यक़ीनी खुल्लम खुल्ला जादू है

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۚ أَسِحْرٌ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّحَرُونَ

मूसा ने कहा क्या जब (दीन) तुम्हारे पास आया तो उसके बारे में कहते हो कि क्या ये जादू है और जादूगर लोग कभी कामयाब न होंगे

قَالُوا ۚ أَجِئْنَا لِنُلْفِتَنَّا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ ءَابَاءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ
وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ

वह लोग कहने लगे कि (ऐ मूसा) क्यों तुम हमारे पास उस वास्ते आए हो कि जिस दीन पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया उससे तुम हमें बहका दो और सारी ज़मीन में ही दोनों की बढ़ाई हो और ये लोग तुम दोनों पर ईमान लाने वाले नहीं

وَقَالَ فِرْعَوْنُ أَتُتُونِي بِكُلِّ سَحَرٍ عَلِيمٍ ۚ

और फिरऔन ने हुक्म दिया कि हमारे हुज़ूर में तमाम खिलाड़ी (वाक़िफ़कार) जादूगर को तो ले आओ

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا ۚ مَا أَنْتُمْ مُّلْقُونَ

फिर जब जादूगर लोग (मैदान में) आ मौजूद हुए तो मूसा ने उनसे कहा कि तुमको जो कुछ फेंकना हो फेंको

فَلَمَّا أَلْقَوْا ۚ قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُمْ بِهِ السَّحَرُ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا
يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ

फिर जब वह लोग (रस्सियों को साँप बनाकर) डाल चुके तू मूसा ने कहा जो कुछ तुम (बनाकर) लाए हो (वह तो सब) जादू है- इसमें तो शक़ ही नहीं कि खुदा उसे फौरन मिटियामेट कर देगा (क्योंकर) खुदा तो हरगिज़ मफ़सिदों (फ़साद करने वालों) का काम दुरुस्त नहीं होने देता

وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۚ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ

और खुदा सच्ची बात को अपने कलाम की बरकत से साबित कर दिखाता है अगरचे गुनाहगारों को ना गँवार हो

فَمَا ءَامَنَ لِمُوسَىٰ إِلَّا ذُرِّيَّةٌ ۚ مِّنْ قَوْمِهِ ۚ عَلَىٰ خَوْفٍ ۚ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۚ هُمْ أَنْ
يَفْتِنَهُمْ ۚ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ ۚ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ ۚ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ

अलगरज़ मूसा पर उनकी क़ौम की नस्ल के चन्द आदमियों के सिवा फिरऔन और उसके सरदारों के इस ख़ौफ़ से कि उन पर कोई मुसीबत डाल दे कोई ईमान न लाया और इसमें शक़ नहीं कि फिरऔनरूप ज़मीन में बहुत बढ़ा चढ़ा था और इसमें शक़ नहीं कि वह यक़ीनन ज्यादाती करने वालों में से था

وَقَالَ مُوسَىٰ يُقَوْمُ إِن كُنْتُمْ ءَامَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا ۖ إِن كُنْتُمْ مُّسْلِمِينَ

और मूसा ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम (सच्चे दिल से) खुदा पर ईमान ला चुके तो अगर तुम फरमाबरदार हो तो बस उसी पर भरोसा करो

فَقَالُوا ۖ عَلَىٰ اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً ۖ لِلْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ

उस पर उन लोगों ने अर्ज की हमने तो खुदा ही पर भरोसा कर लिया है और दुआ की कि ऐ हमारे पालने वाले तू हमें ज़ालिम लोगों का (ज़रिया) इम्तिहान न बना

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

और अपनी रहमत से हमें इन काफ़िर लोगों (के नीचे) से नजात दे

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوَّءَا لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا ۚ وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً ۖ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ ۖ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ

और हमने मूसा और उनके भाई (हारुन) के पास 'वही' भेजी कि मिस्र में अपनी क़ौम के (रहने सहने के) लिए घर बना डालो और अपने अपने घरों ही को मस्जिदें करार दे लो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ों और मोमिनीन को (नजात का) खुशख़बरी दे दो

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ ءَاتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَأَهُ زِينَةً ۖ وَأَمْوَالًا ۚ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا ۖ عَنْ سَبِيلِكَ ۖ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا ۖ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ

और मूसा ने अर्ज की ऐ हमारे पालने वाले तूने फिरऔन और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में (बड़ी) आराइश और दौलत दे रखी है (क्या तूने ये सामान इस लिए अता किया है) ताकि ये लोग तेरे रास्तों से लोगों को बहकाएं परवरदिगार तू उनके माल (दौलत) को शारत (बरबाद) कर दे और उनके दिलों पर सख्ती कर (क्योंकि) जब तक ये लोग तकलीफ़ देह अज़ाब न देख लेंगे ईमान न लाएंगे

قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعَانِ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ

(खुदा ने) फरमाया तुम दोनों की दुआ कुबूल की गई तो तुम दोनों साबित कदम रहो और नादानों की राह पर न चलो

﴿ وَجُوزَنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ ﴾ ﴿ بَغِيًّا ﴾ ﴿ وَاعْدُوا ﴾ ﴿ حَتَّىٰ إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ ءَامَنْتُ أَنَّهُ ﴾ ﴿ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي ءَامَنْتُ بِهِ ﴾ ﴿ بَنُوآ ﴾ ﴿ إِسْرَءِيلَ وَأَنَا ﴾ ﴿ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴾

और हमने बनी इसराइल को दरिया के उस पार कर दिया फिर फिरऔन और उसके लश्कर ने सरकशी की और शरारत से उनका पीछा किया-यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो कहने लगा कि जिस खुदा पर बनी इसराइल ईमान लाए हैं मैं भी उस पर ईमान लाता हूँ उससे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं फरमाबरदार बन्दों से हूँ

﴿ ءَاَلَنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ﴾

अब (मरने) के वक्त रूठमान लाता है हालाँकि इससे पहले तो नाफ़रमानी कर चुका और तू तो फ़सादियों में से था

﴿ فَالْيَوْمَ نُنَجِّكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلَقَكَ ءَايَةً ﴾ ﴿ ؟ ﴾ ﴿ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ ءَايَتِنَا لَغَفُلُونَ ﴾

तो हम आज तेरी रूह को तो नहीं (मगर) तेरे बदन को (तह नशीन होने से) बचाएँगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए इब्रत का (बाइस) हो और इसमें तो शक़ नहीं कि तेरे लोग हमारी निशानियों से यक़ीनन बेख़बर हैं

﴿ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مَبُوءًا صِدْقٍ ﴾ ﴿ وَرَزَقْنَهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا اخْتَلَفُوا ﴾ ﴿ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ﴾ ﴿ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا ﴾ ﴿ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴾

और हमने बनी इसराइल को (मालिक शाम में) बहुत अच्छी जगह बसाया और उन्हें अच्छी अच्छी चीज़ें खाने को दी तो उन लोगों के पास जब तक इल्म (न) आ चुका उन लोगों ने एख़्तेलाफ़ नहीं किया इसमें तो शक़ ही नहीं जिन बातों में ये (दुनिया में) बाहम झगड़े रहे है क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार इसमें फैसला कर देगा

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ ۖ مِمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْأَلِ الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ ۖ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ

पस जो कुरान हमने तुम्हारी तरफ नाज़िल किया है अगर उसके बारे में तुम को कुछ शक हो तो जो लोग तुम से पहले से किताब (खुदा) पढ़ा करते हैं उन से पूछ के देखो तुम्हारे पास यकीनन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बरहक़ किताब आ चुकी तो तू न हरगिज़ शक करने वालों से होना

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَبُوا ۖ بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونُ مِنَ الْخُسِرِينَ

न उन लोगों से होना जिन्होंने खुदा की आयतों को झुठलाया (वरना) तुम भी घाटा उठाने वालों से हो जाओगे

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ

(ऐ रसूल) इसमें शक नहीं कि जिन लोगों के बारे में तुम्हारे परवरदिगार को बातें पूरी उतर चुकी हैं (कि ये मुस्तहके अज़ाब हैं)

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَرَوْهَا ۖ أَلْعَذَابَ الْأَلِيمِ

वह लोग जब तक दर्दनाक अज़ाब देख (न) लेंगे ईमान न लाएंगे अगरचे इनके सामने सारी (खुदाई के) मौजिज़े आ मौजूद हो

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ ءَامَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّا ءَامَنُوا ۖ كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۖ

कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान कुबूल करती तो उसको उसका ईमान फायदे मन्द होता हाँ यूनूस की कौम जब (अज़ाब देख कर) ईमान लाई तो हमने दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी में उनसे रुसवाई का अज़ाब दफा कर दिया और हमने उन्हें एक खास वक्त तक चैन करने दिया

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَءَامَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا ۖ أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا ۖ مُؤْمِنِينَ

और (ऐ पैग़म्बर) अगर तेरा परवरदिगार चाहता तो जितने लोग रूए ज़मीन पर हैं सबके सब ईमान ले आते तो क्या तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो ताकि सबके सब ईमानदार हो जाएँ हालाँकि किसी शख्स को ये एख्तेयार नहीं

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَيَجْعَلُ الرَّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ

कि बगैर खुदा की इजाज़त ईमान ले आए और जो लोग (उसूले दीन में) अक़ल से काम नहीं लेते उन्हीं लोगों पर खुदा (कुफ़र) की गन्दगी डाल देता है

قُلْ أَنْظَرُوا ۚ مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِي أَلْءَايَتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ ۚ لَا يُؤْمِنُونَ

(ऐ रसूल) तुम कहा दो कि ज़रा देखों तो सही कि आसमानों और ज़मीन में (खुदा की निशानियाँ क्या) क्या कुछ हैं (मगर सच तो ये है) और जो लोग ईमान नहीं कुबूल करते उनको हमारी निशानियाँ और डरावे कुछ भी मुफीद नहीं

فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا ۚ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا ۚ إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ

तो ये लोग भी उन्हें सज़ाओं के मुन्तिज़र (इन्तज़ार में) हैं जो उनसे क़बल (पहले) वालों पर गुज़र चुकी हैं (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि अच्छा तुम भी इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ यक़ीनन इन्तज़ार करता हूँ

ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ ۚ كَذَلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنَجِّ الْمُؤْمِنِينَ

फिर (नुज़ूले अज़ाब के वक़्त) हम अपने रसूलों को और जो लोग ईमान लाए उनको (अज़ाब से) तलूउ बचा लेते हैं यूँ ही हम पर लाज़िम है कि हम ईमान लाने वालों को भी बचा लें

قُلْ يَٰأَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ ۖ مِنْ دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ ۚ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर तुम लोग मेरे दीन के बारे में शक़ में पड़े हो तो (मैं भी तुमसे साफ़ कहें देता हूँ) खुदा के सिवा तुम भी जिन लोगों की परसतिश करते हो मैं तो उनकी परसतिश नहीं करने का मगर (हाँ) मैं उस खुदा की इबादत करता हूँ जो तुम्हें (अपनी कुदरत से दुनिया से) उठा लेगा और मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मोमिन हूँ

وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

और (मुझे) ये भी (हुक्म है) कि (बातिल) से कतरा के अपना रुख़ दीन की तरफ़ कायम रख और मुशरैकीन से हरगिज़ न होना

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِنَ
الْظَّالِمِينَ

और खुदा को छोड़ ऐसी चीज़ को पुकारना जो न तुझे नफा ही पहुँचा सकती हैं न नुकसान ही पहुँचा सकती है तो अगर तुमने (कहीं ऐसा) किया तो उस वक्त तुम भी ज़ालिमों में (शुमार) होगें

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ ۖ فَلَا كَاشِفَ لَهُ ۖ إِلَّا هُوَ ۚ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ ۖ فَلَا رَادَّ
لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

और (याद रखो कि) अगर खुदा की तरफ से तुम्हें कोई बुराई छू भी गई तो फिर उसके सिवा कोई उसका दफा करने वाला नहीं होगा और अगर तुम्हारे साथ भलाई का इरादा करे तो फिर उसके फज़ल व करम का लपेटने वाला भी कोई नहीं वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे फायदा पहुँचाएँ और वह बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

قُلْ يَأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۚ ۚ
وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنَا ۚ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۚ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ लोगों तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास हक़ (कुरान) आ चुका फिर जो शख्स सीधी राह पर चलेगा तो वह सिर्फ अपने ही दम के लिए हिदायत एख्तेयार करेगा और जो गुमराही एख्तेयार करेगा वह तो भटक कर कुछ अपना ही खोएगा और मैं कुछ तुम्हारा ज़िम्मेदार तो हूँ नहीं

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَأَصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَكِمِينَ

और (ऐ रसूल) तुम्हारे पास जो 'वही' भेजी जाती है तुम बस उसी की पैरवी करो और सब्र करो यहाँ तक कि खुदा तुम्हारे और काफिरों के दरमियान फैसला फरमाए और वह तो तमाम फैसला करने वालों से बेहतर है

[1]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ كِتَابٌ أُحْكِمَتْ آيَاتُهُ ۝ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ

अलिफ़ लाम रा - ये (कुरान) वह किताब है जिसकी आयते एक वाकिफ़कार हकीम की तरफ से (दलाएल से) खूब मुस्तहकिम (मज़बूत) कर दी गयीं

[2]

أَلَّا تَعْبُدُوا ۝ إِلَّا اللَّهَ ۝ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ ۝ وَبَشِيرٌ ۝

फिर तफ़सीलदार बयान कर दी गयी हैं ये कि खुदा के सिवा किसी की परसतिश न करो मै तो उसकी तरफ से तुम्हें (अज़ाब से) डराने वाला और (बेहिश्त की) खुशख़बरी देने वाला (रसूल) हूँ

[3]

وَأَنْ أَسْتَغْفِرُوا ۝ رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا ۝ إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ ۝ مُّسَمًّى ۝ وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ ۝ فَضْلَهُ ۝ وَإِنْ تَوَلَّوْا ۝ فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ ۝

क़बिर

और ये भी कि अपने परवरदिगार से मराफिरत की दुआ माँगों फिर उसकी बारगाह में (गुनाहों से) तौबा करो वही तुम्हें एक मुक़रर मुद्दत तक अच्छे नुत्फ के फायदे उठाने देगा और वही हर साहबे बुर्ज़गी को उसकी बुर्जुगी (की दाद) अता फरमाएगा और अगर तुमने (उसके हुक्म से) मुँह मोड़ा तो मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े (खौफनाक) दिन के अज़ाब का डर है

[4]

إِلَىٰ اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۝ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

(याद रखो) तुम सब को (आखिरकार) खुदा ही की तरफ लौटना है और वह हर चीज़ पर (अच्छी तरह) क़ादिर है

[5]

أَلَا إِنَّهُمْ يَثْنُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا ۝ مِنْهُ ۝ أَلَا حِينَ يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

(ऐ रसूल) देखो ये कुफ़र (तुम्हारी अदावत में) अपने सीनों को (गोया) दोहरा किए डालते हैं ताकि खुदा से (अपनी बातों को) छिपाए रहें (मगर) देखो जब ये लोग अपने कपड़े खूब लपेटते हैं (तब भी तो) खुदा (उनकी बातों को) जानता है जो छिपाकर करते हैं और खुल्लम खुल्ला करते हैं इसमें शक़ नहीं कि वह सीनों के भेद तक को खूब जानता है